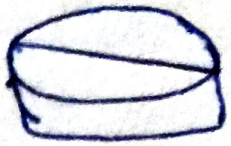

# राग पूरियाधनाश्री

तीब्रास्तु निगमा यस्यां कोमलौ धैवतर्षभी।
पांशा सम्वा दी ऋषभा सायं पूर्याधनाश्रिका।।

-राग चन्द्रिकासार

संक्षिप्त विवरण- पूरिया धनाश्री राग को पूर्वी थाट जन्य राग माना गया है। इसमें ऋषभ, धैवत कोमल तथा तीव्र मध्यम प्रयोग किया जाता है। वादी पंचम तथा सम्वादी षडज है। जाति सम्पूर्ण है। गायन समय सायंकाल, दिन का चौथा प्रहर है।

आरोह- नि॒ रे॒ ग मं॑ प, मं॑ ध॒ नि सां।

अवरोह- रें॒ नि ध॒ प,मं॑ ग, मं॑ रे॒ ग, रे॒ सा।

पकड़- नि॒ रे॒ ग मं॑ प, ध॒ प, मं॑ ग मं॑ रे॒ ग, रे॒ सा।

## मतभेद-

भातखन्डे कृति क्रमिक पुस्तक के चौथे भाग (हिंदी प्रथम संस्करण) में पृष्ठ ३४३ पर प व रे॒ को वादी-सम्वादी माना गया है। हम सभी जानते हैं कि वादी-सम्वादी में षडज-पंचम भाव अथवा षडज-मध्यम भाव का होना अति आवश्यक है। प रे॒ में इनमें से कोई भाव नहीं है। अतः इस दृष्टि से रे॒ का सम्वादी होना उचित नहीं ठहरता, दूसरे, पूरियाधनाश्री में कोमल ऋषभ पर कभी भी न्यास नहीं किया जाता। सम्वादी स्वर के लिये यह आवश्यक है कि उसे राग रूपी राज्य में वादी रुपी राजा का मन्त्रित्व प्राप्त हो। अतः हमारे विचार से कोमल रे के स्थान पर सा को सम्वादी मानना अधिक न्याय-संगत है। कुछ विद्वान प को वादी और सा को सम्वादी मानते भी हैं।

## विशेषता -

(१) स्वयं 'पूरिया धनाश्री' नाम से यह स्पष्ट है कि इसमें पूरिया और धनाश्री इन दो रागों का मिश्रण है। प्रचलित धनाश्री काफी थाट का राग है, जिसमें ग नि स्वर कोमल हैं। अतः बहुत से गायक पूरिया धनाश्री को एक स्वतन्त्र राग मानते हैं।, लेकिन नहीं, इसमें पूर्वी थाट जन्य धनाश्री और पूरिया का मिश्रण है।

(२) सायंकालीन सन्धिप्रकाश रागों में यह राग अधिक लोकप्रिय है। मारवा, श्री, पूर्वी आदि रागों की अपेक्षा गायक पूरिया धनाश्री राग गाना अधिक पसन्द करते हैं।

(३) मे रे ग तथा रें नि स्वरों की संगति इस राग में बार-बार दिखाई जाती है। उदाहरण के लिये आलाप देखिये।

न्यास के स्वर- सा, ग और प

समप्रकृति राग- पूर्वी और जैताश्री

विशेष स्वर संगतियाँ-

१- नि़ रे ग मे प,
२- (प), मे ग मे रे ग,
३- रें नि ध प, मे ग, मे रे ग,

## स्वरों का अध्ययन-

सा- सामान्य
रे- अलंघन बहुत्व
ग- दोनों प्रकार का बहुत्व
मे- अलघंन बहुत्व
प- दोनों प्रकार का बहुत्व
ध व नि- अलंघन बहुत्व

## तिरोभाव- आविर्भाव

मूल राग- (प) मे , मे रे ग, (पूरिया धनाश्री)
तिरोभाव- ग मे ध प, मे ग मे S S ग, (बसंत)
आविर्भाव- मे रे ग S रे सा, प, (पूरिया धनाश्री)

**स्वर-विस्तार**

(१) सा, नि सा, रे सा, ़ि ा, ऩि सा, नि सा।
(२) ऩि सा, रे म रे, ऩि सा, नि॒ प ऩि सा, रे, प म रे ग रे सा, ऩि सा।
(३) ऩि सां, म रे, प म, प रे म रे, ऩि सा म रे, प म रे, म रे सा, ऩि सा।
(४) रे म प, म प नि॒ प, नि॒ प म रे म प नि प, रे म रे म प नि सां, प नि सां, नी॒ प म नी॒ प, म रे प म रे सा।
(५) म प नि सां, नि सां, प नि सां रें, सां रें, सां रें म रें नि, सां प नि सां, रे, नि सां, नी॒ प, म प नी सां प नी॒ प म रे, प म रे, सा ऩि सा।

**१६. राग बागेश्री**

दोहा - तीवर रिध कोमल गमनि, मध्यम बादि बखानि।
खरज जहाँ संवादि है, बागेसरी लखानि।।

थाट-काफी। जाति-औड़व-सम्पूर्ण।
वादी-मध्यम। संवादी-षड्ज।
समय-रात्रि का दूसरा प्रहर (मध्य रात्रि)।
आरोह - सां ऩि॒ ध़ ऩि॒ सा म, ग॒ म ध नि॒ सां।
अवरोह - सां नी॒ ध म ग॒ रे सा।
पकड़ - ध ऩि॒ सा, म ध नि॒ ध म, ग॒ रे सा रे सा।

इस राग में गान्धार तथा निषाद स्वर कोमल और बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं। राग की जाति के विषय में मतभेद है। कुछ लोग इसके आरोह में रे तथा प वर्जित करके इसे औड़व-सम्पूर्ण जाति का मानते हैं। कुछ लोग आरोह में केवल पंचम वर्जित करके इसे षाडव जाति का मानते हैं और कुछ लोग इसमें सब स्वरों का प्रयोग करके इसे सम्पूर्ण जाति का मानते हैं। मेरे विचार से इसे औड़व-सम्पूर्ण ही मानना उचित है। जो लोग इस राग के आरोह में पंचम का प्रयोग करते हैं, वे इस प्रकार करते हैं – नि॒ ध प नि॒ ध, म अथवा ध म प ध, म ग॒ रे सा। कभी-कभी विवादी स्वर के नाते शुद्ध निषाद का प्रयोग इस राग में करते हैं।



**स्वर-विस्तार**

(१) सा, ऩि॒ ध़ ऩि॒ सा, सा म, म, ग॒ रे, सा सा, म ग॒ रे सा।
(२) ऩि॒ सा ग, म ग॒ म ध, म, ग॒ रे सा, ऩि॒ ध़ सा, ध़ ऩि॒ सा, म, मं ग॒ रे म ग॒ सा।
(३) ऩि॒ सा म, म ग॒ म ध, म ग॒, म ध, नि॒ ध, म, ग॒ म ध ऩि॒ सा, नि॒ ध, म ग॒, रे सा, ऩि॒ ध़, ऩि॒ सा म।
(४) ग॒ म ध, नि॒ ध म ध नि॒ सां, नि॒ ध म ध म नि॒ ध, म ग॒ रे ग॒ म ध, ध म, ग॒ रे सा।
(५) ग म ध नि सां, नि॒ सां नि॒ सां, रे सां नि॒ सां नि॒ ध, ध नि॒ सां, मं गं रे नि॒ सां सां, रे सां नि॒ सां, नि॒ ध म ध सां नि॒ ध म, म प ध, म ग॒ रे सा।

**१७. राग भीमपलासी**

दोहा – तीखे रिध कोमल गमनि, आरोहत रिधहीन।
स म सम्वादी वादि तें भीमपलासी चीन्ह।।

थाट-काफी। जाति-औड़व-सम्पूर्ण।
वादी-मध्यम। संवादी-षड्ज।
समय-दिन का तीसरा प्रहर।
आरोह-ऩि॒ सा ग॒ म प नि॒ सां।
अवरोह - सां नि॒ ध प म प ग॒ रे सा।
पकड़ - ऩि॒, सा म, म ग॒ प म, ग॒ म ग॒ रे सा।

इस राग में गान्धार तथा निषाद कोमल और बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में रे और ध वर्जित हैं, इसलिए इसकी जाति औड़व-सम्पूर्ण है। मध्यम स्वर [illegible] होता है और यह राग का वादी स्वर

## ११. राग भूपाली

दोहा – आरोही अवरोही में सुर मनि कीन्हें त्याग।
ध ग संवादी वादि तें, कहत भूपाली राग।।

थाट-कल्याण। जाति-औड़व-औड़व।
वादी-गान्धार। संवादी-धैवत।
समय-रात्रि का प्रथम प्रहर।
आरोह-सा रे ग प ध सां।
अवरोह-सां ध प ग रे सा।
पकड़-ग, रे सा ध़ सा रे ग, प ग, ध प ग, रे सा।

भूपाली राग में सब स्वर शुद्ध लगते हैं। इससे आरोह तथा अवरोह में मध्यम और निषाद स्वर वर्जित है। इसलिए इसकी जाति औड़व-औड़व है। इसके थाट के विषय में बहुत मतभेद है। कुछ लोग इसे बिलावल थाट का मानते हैं तथा कुछ लोग कल्याण थाट का। क्योंकि इस राग में सब स्वर शुद्ध लगते हैं और मध्यम स्वर वर्जित है इसलिए बिलावल थाट ही उचित जान पड़ता है। परन्तु कल्याण थाट को माननेवाले कहते हैं कि मध्यम के वर्जित होने के कारण इसे बिलावल थाट का नहीं कह सकते क्योंकि मध्यम के अतिरिक्त कल्याण में भी सब स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग के निकट का राग देशकार है, जिससे इसे सदैव बचना चाहिए। देशकार तथा भूपाली में केवल वादी-संवादी स्वरों का अन्तर है अन्यथा दोनों रागों के स्वर समान हैं।

**स्वर-विस्तार**

(१) सा, रे सा ध़ ध़ सा, सा रे ग, ग रे सा, रें, सा, ध़ प ध सा।
(२) सा रे ग, ग रे, सा, रे सा, रे ग प, ध प ग रे, रे, ग प ग रे सा, रे सा, ध़ ध़, सा रे ग, रे सा।



(३) सा रे ग, प प ग, ग प ध, प ग प ग रे, ग प ध सा, ध प ग रे, ग प, रे सा।
(४) ग रे, ग प ध प, सां सां रें रे सां ध ध सां रे सां, रे सां ध प, ग प ध सां, सां रे ग, रे सां ध प, ग प ध प ग, रे सा रे सा।
(५) गं गं प ध सां, ध ध सां, रें सां, ध ध, सा रें ग रें सां रें सां ध प, ग प ध सां, ध प, ग प ध प ग, सा रे सा।

## १२. राग बिहाग

दोहा – दोऊ मध्यम अरु शुद्ध स्वर, चढ़त रि-ध को त्याग।
ग नि वादी सम्वादी त, जानत राग बिहाग।

थाट-कल्याण। जाति-औड़व-सम्पूर्ण।
वादी-गान्धार। संवादी-निषाद।
समय-रात्रि का दूसरा प्रहर।
आरोह-नि सा ग म प नि सा।
अवरोह-सां नि ध प मं प ग म ग रे सा।
पकड़-नि सा, ग म प, ग म ग, रे सा।

इस राग में सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ऋषभ और धैवत स्वर वर्जित है तथा आरोह सम्पूर्ण है। इस राग में तीव्र मध्यम को लेने का प्रचार है। वास्तव में तीव्र मध्यम इस राग में विवादी स्वर की तरह लिया जाता है परन्तु आजकल तीव्र मध्यम इस राग का मुख्य स्वर बन गया है। इसी तीव्र मध्यम के कारण विद्वानों में इस राग के थाट के विषय में मतभेद है। कुछ लोग इसे बिलावल थाट का मानते हैं और तीव्र मध्यम का प्रयोग केवल विवादी स्वर के नाते करते हैं। कुछ लोग कल्याण थाट का मानते हैं और तीव्र मध्यम का स्वतन्त्र अथवा अनुवादी स्वर की तरह प्रयोग करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है

(७) रुपक ताल-मात्रा ७

विभाग ३, ताली १, ४, और ६ पर

ती ती ना । धी ना । धी ना ।

x २ ३

नोट- कुछ विद्वान ताल देने में प्रथम मात्रा पर ताली के स्थान पर खाली देते हैं, किंतु क्रियात्मक गायन अथवा वादन में गत अथवा गीत के सम से ही रुपक ताल बजाना प्रारम्भ करते है। यह इस बात का प्रमाण है कि वे प्रथम मात्रा परसम मानते है।

## ( १० ) सूल अथवा सुरफाक ताल-मात्रा १०

विभाग 5, ताली 1, 5, 7 पर और खाली 3 व 9 पर

| धा | धा | दिं | ता | किट | धा | किट | कत | गदि | गन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | ० | | 2 | | 3 | | ० | |

# देशकार और भूपाली की तुलना

## समता-

(१) दोनों रागों की जाति ओडव-ओडव मानी जाती है।

(२) दोनों में सा रे ग प ध स्वर प्रयोग किये जाते हैं।

(३) सां ध प, ग प ध प, ग रे सा तथा ग प ध सां, स्वर-समुदाय दोनों में प्रयोग किये जाते हैं।

## विभिन्नता-

(१) राग भूपाली कल्याण थाट से और देशकार बिलावल थाट से उत्पन्न माना गया है।

(२) भूपाली में वादी-सम्वादी ग ध और देशकार में ध ग हैं, अतः भूपाली पूर्वांग वादी और देशकार उत्तरांग वादी राग है।

(३) भूपाली में ग और प स्वरों का न्यास होता है, किन्तु ध पर कभी भी न्यास नहीं होता। देशकार में प, ध और तार सा पर न्यास होता है, किन्तु ग पर न्यास नहीं होता है।

(४) चूँकि भूपाली और देशकार क्रमशः कल्याण और बिलावल थाट के राग हैं, इसलिये भूपाली में कल्याण और देशकार में बिलावल का आभास दिखाई पड़ना स्वाभाविक है।

(५) गाते-बजाते समय देशकार के आरोह में अधिकतर रे छोड़ देते हैं, जैसे- सा ग प, किन्तु भूपाली के आरोह में ऋषभ कभी भी नहीं छोड़ा जाता।

(६) भूपाली रात्रि के प्रथम प्रहर में और देशकार दिन के द्वितीय प्रहर में गाया-बजाया जाता है।